कथा सरिता

दौड़

एक दस वर्षीय लड़का रोज़ अपने पिता के साथ पास की पहाड़ी पर सैर को जाता था।

एक दिन लड़के ने कहा, पिताजी चलिए आज हम दौड़ लगाते हैं, जो पहले चोटी पे लगी उस झंडी को छू लेगा वो रेस जीत जाएगा।

पिताजी तैयार हो गए। दूरी काफी थी, दोनों ने धीरे-धीरे शुरु किया। कुछ देर दौड़ने के बाद पिताजी अचानक ही रुक गए। क्या हुआ पापा, आप अचानक रुक क्यों गए, आपने अभी से हार मान ली क्या? लड़का मुस्कुराते हुए बोला। नहीं-नहीं, मेरे जूते में कुछ कंकड़ पड़ गए हैं, बस उन्हीं को निकालने के लिए रुका हूँ। पिताजी बोले। लड़का बोला, अरे, कंकड़ तो मेरे भी जूतों में पड़े हैं, पर अगर मैं रुक गया तो रेस हार जाऊँगा..., और ये कहता हुआ वह तेज़ी से आगे भागा। पिताजी भी कंकड़ निकाल कर आगे बढ़े, लड़का बहुत आगे निकल चुका था, पर अब उसे पाँव में दर्द का एहसास हो रहा था, और उसकी गति भी घटती जा रही थी। धीरे-धीरे पिताजी भी उसके करीब आने लगे थे। लड़के के पैरों में तकलीफ देख पिताजी पीछे से चिल्लाये, क्यों नहीं तुम भी अपने कंकड़ निकाल लेते हो? मेरे पास इसके लिए टाइम नहीं है! लड़का बोला और दौड़ता रहा। कुछ ही देर में पिताजी उससे आगे निकल गए। चुभते कंकड़ों की वजह से लड़के की तकलीफ बहुत बढ़ चुकी थी और अब उससे चला नहीं जा रहा था, वह रुकते-रुकते चीखा, पापा, अब मैं और नहीं दौड़ सकता! पिताजी जल्दी से दौड़कर वापस आये और अपने बेटे के जूते खोले, देखा तो पाँव से खून निकल रहा था। वे झटपट उसे घर ले गए और मरहम-पट्टी की। जब दर्द कुछ कम हो गया तो उन्होंने समझाया, बेटे, मैंने आपसे कहा था न कि पहले अपने कंकड़ों को निकाल लो फिर दौड़ो।

मैंने सोचा मैं रुकुंगा तो रेस हार जाऊंगा! बेटा बोला। ऐसा नहीं है बेटा, अगर हमारी लाइफ में कोई प्रॉब्लम आती है तो हमें उसे ये कह कर टालना नहीं चाहिए कि अभी हमारे पास समय नहीं है। दरअसल होता क्या है, जब हम किसी समस्या की अनदेखी करते हैं तो वो धीरे-धीरे और बड़ी होती जाती है और अंततः हमें जितना नुकसान पहुंचा सकती थी उससे कहीं अधिक नुकसान पहुंचा देती है। तुम्हें पत्थर निकालने में मुश्किल से 1 मिनट का समय लगता पर अब उस 1 मिनट के बदले तुम्हें 1 हफ्ते तक दर्द सहना होगा। पिताजी ने अपनी बात पूरी की।

समस्याओं को तभी पकड़िये जब वो छोटी हैं वरना देरी करने पर वे उन कंकड़ों की तरह आपका भी खून बहा सकती हैं।

आपबीती

एक राजा अपने लश्कर के साथ नाव में लौट रहा था...राजा ने कुछ गुलाम भी खरीदे थे जो उसी नाव में लौट रहे थे... जैसे ही नाव चली तो एक गुलाम डर के मारे चिल्लाने लगा क्योंकि वो नाव में कभी बैठा नहीं था... परेशान राजा ने वज़ीर से कहा इसे चुप कराओ... राजा की बात सुनके वज़ीर ने उसे चुप कराने का प्रयत्न किया और ना चुप रहने पर आखिरकार उसे पानी में फेंक दिया..फिर वज़ीर ने कहा इसे पानी से निकालो, पानी से निकालने के बाद गुलाम चुप बैठ गया... राजा ने कहा वज़ीर ये क्या माजरा है, गुलाम एकदम से चुप कैसे बैठ गया... वज़ीर ने कहा जहाँपनाह! ये गुलाम नाव में सुरक्षित बैठने का आराम और पानी में डूबने की तकलीफ नहीं जानता था, जब इसे पानी में फेंका गया तब इसे समझ में आया की नाव में सुरक्षित बैठना क्या होता है...।

दोस्ती भगवान से

एक बच्चा गला देनेवाली सर्दी में नंगे पैर प्लास्टिक के तिरंगें बेच रहा था, लोग उसमे भी मोलभाव कर रहे थे। एक सज्जन को उसके पैर देखकर बहुत दुःख हुआ, सज्जन ने बाज़ार से नया जूता खरीदा और उसे देते हुए कहा - बेटा लो, ये जूता पहन लो। लड़के ने फ़ौरन जूते निकाले और पहन लिए, उसका चेहरा ख़ुशी से दमक उठा था, वो उस सज्जन की तरफ़ पल्टा और पूछा, आप भगवान हैं? उसने घबरा कर हाथ छुड़ाया और कानों को हाथ लगा कर कहा, नहीं बेटा, नहीं मैं भगवान नहीं। लड़का फिर मुस्कराया और कहा- तो फिर ज़रूर भगवान के दोस्त होंगे, क्योंकि मैंने कल रात भगवान से कहा था कि मुझे नए जूते दे दें। वो सज्जन मुस्कुरा दिया और उसके माथे को प्यार से चूमकर अपने घर की तरफ़ चल पड़ा। अब वो सज्जन भी जान चुके थे कि भगवान का दोस्त होना कोई मुश्किल काम नहीं हैं।

ज़िम्मेवार कौन?

सन्यास लेने के बाद गौतम बुद्ध ने अनेक क्षेत्रों की यात्रा की। एक बार वह एक गांव में गए। वहां एक स्त्री उनके पास आई और बोली- आप तो कोई राजकुमार लगते हैं। क्या मैं जान सकती हूँ कि इस युवावस्था में गेरुआ वस्त्र पहनने का क्या कारण है? बुद्ध ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि - तीन प्रश्नों के हल ढूंढ़ने के लिए उन्होंने सन्यास लिया।

बुद्ध ने कहा - हमारा यह जो युवा व आकर्षक देह है, पर जल्दी ही यह वृद्ध होगा, फिर बीमार और अंत में मृत्यु के मुंह में चला जाएगा। मुझे वृद्धावस्था, बीमारी व मृत्यु के कारण का ज्ञान प्राप्त करना है... बुद्ध के विचारों से प्रभावित होकर उस स्त्री ने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया... शीघ्र ही यह बात पूरे गांव में फैल गई। गांव वासी बुद्ध के पास आए व आग्रह किया कि वे इस स्त्री के घर भोजन करने न जाएं..! क्योंकि वह चरित्रहीन है। बुद्ध ने गांव के मुखिया से पूछा? क्या आप भी मानते हैं कि वह स्त्री चरित्रहीन है? मुखिया ने कहा कि मैं शपथ लेकर कहता हूं कि वह बुरे चरित्र वाली स्त्री है। आप उसके घर न जाएं। बुद्ध ने मुखिया का दायां हाथ पकड़ा और उसे ताली बजाने को कहा। मुखिया ने कहा - मैं एक हाथ से ताली नहीं बजा सकता, क्योंकि मेरा दूसरा हाथ आपने पकड़ा हुआ है। बुद्ध बोले, इसी प्रकार यह स्वयं चरित्रहीन कैसे हो सकती है जब तक इस गांव के पुरुष चरित्रहीन न हों! अगर गांव के सभी पुरुष अच्छे होते तो यह औरत ऐसी न होती इसलिए इसके चरित्र के लिए यहां के पुरुष ज़िम्मेदार हैं। यह सुनकर सभी लज्जित हो गए। लेकिन आजकल हमारे समाज के पुरुष लज्जित नहीं गौर्वान्वित महसूस करते हैं। क्योंकि यही हमारे पुरुष प्रधान समाज की रीति एवं नीति है। सकारात्मक सोचो, सकारात्मक सोच से ही अपना और घर समाज देश का विकास होगा।

मुम्बई-जोगेश्वरी इस्ट। सांसद गोपाल शेट्टी को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के बाद ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना।

जयपुर-वैशाली नगर। `बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' कार्यक्रम में उपस्थित हैं स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र सिंह राठौड़, ब्र.कु.सुषमा, चीफ इंजीनियर राम गोपाल डंगायत, डॉ.अदिती, ब्र.कु.कमलेश व ब्र.कु.आशा।

झालावाड़-राज.। विधायक नरेन्द्र नागर एवं ग्रामीण मंडल अध्यक्ष हरि पाटीदार को महाशिवरात्रि विशेषांक `शिव अवतरण' भेंट करते हुए ब्र.कु. नेहा।

सादुलपुर-राज.। `बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में विधायक मनोज न्यांगली को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. वैशाली व ब्र.कु. सुमन।

खेडब्रह्मा। `दिव्य दर्शन मेले' के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हैं समाज सेवक धनजी भाई पटेल, जज गांधी साहेब, नगरपालिका अध्यक्ष सागर भाई पटेल, ब्र.कु.चन्द्रिका, ब्र.कु.ज्योति तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

महराजगंज (उ.प्र.)। मुख्य जिला न्यायाधीश एस.के.पाण्डे को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात ब्र.कु.लक्ष्मी, ब्र.कु.सुमन, ब्र.कु.करन तथा ब्र.कु.दामोदर समूह चित्र में।

मुरादाबाद। शिव जयंति पर्व के उपलक्ष्य में निकाली गई प्रभात फेरी में ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के साथ ब्र.कु.आशा व ब्र.कु.सुमित्रा दिखाई दे रहे हैं।